मेरे गीत तुम्हारे हैं

और परछाइयां

मेरे गीत तुम्हारे हैं

साहिर लुधियानवी

साहित्य संगम
लुधियाना

मेरे गीत तुम्हारे हैं

लेखक
—साहिर लुधियानवी

हिन्दी में तीसरी बार
मूल्य : चार रुपये

मुद्रक:
स० जीवन सिंह एम० ए०
लाहौर आर्ट प्रेस कालेज रोड
सिविल लाइन्ज,
लुधियाना

प्रकाशक:
स० जीवन सिंह एम० ए०
लाहौर बुक शाप घण्टा घर
लुधियान

अनुक्रम

दुनिया ने तजुर्बात की सूरत में आज तक
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूँ मैं !

फ़नकार

मैंने जो गीत तेरे प्यार की ख़ातिर लिक्खे
आज उन गीतों को बाज़ार में ले आया हूँ।

आज दुक्कान पे नीलाम उठेगा उनका
तूने जिन गीतों पे रक्खी थी मुहब्बत की असास
आज चांदी के तराज़ू में तुलेगी हर चीज़
मेरे अफ़कार, मेरी शायरी, मेरा अहसास!

जो तेरी ज़ात से मनसूब थे, उन गीतों को
मुफ़लिसी जिन्स बनाने पे उतर आई है
भूख तेरे रुख़े-रंगीं के फ़सानों के इवज़
चन्द अशियाये-ज़रूरत की तमन्नाई है।

देख, इस कारगहे-मेहनतो-सरमाया में
मेरे नग़मे भी मेरे पास नहीं रह सकते
तेरे जलवे किसी ज़रदार की मीरास सही
तेरे ख़ाके भी मेरे पास नहीं रह सकते।

आज उन गीतों को बाज़ार में ले आया हूं
मैंने जो गीत तेरे प्यार की ख़ातिर लिक्खे!!

इन्तज़ार

चाद मद्धम है, आसमां चुप है
नींद को गोद में जहां चुप है

दूर वादी में दूधिया बादल-
झुक के परबत को प्यार करते हैं
दिल में नाकाम हसरतें ले कर-
हम तेरा इन्तज़ार करते हैं

इन बहारों के साये में आ जा
फिर मुहब्बत जवां रहे न रहे !
ज़िन्दगी तेरे नामुरादों पर
कल तलक मेहरबाँ रहे न रहे !

रोज़ की तरह आज भी तारे
सुबह की गर्द मे न खो जायें
आ, तेरे ग़म में जागती आँखें
कम से कम एक रात सो जायें

चाँद मद्धम है, आसमां चुप है
नींद की गोद में जहां चुप है

ग़ज़ल

मुहब्बत तर्क को मैंने गरेबाँ सी लिया मैंने
ज़माने अब तो खुश हो, ज़हर यह भी पी लिया मैंने
अभी ज़िंदा हूँ लेकिन सोचता रहता हू यह दिल में,
कि अब तक किस तमन्ना के सहारे जी लिया मैंने
उन्हें अपना नहीं सकता मगर इतना भी क्या कम है,
कि कुछ मुद्दत हसीं ख़्वाबों में खो कर जी लिया मैंने
बस अब तो दामने-दिल छोड़ दो बेकार उम्मीदो,
बहुत दुख सह लिये मैंने, बहुत दिन जी लिया मैंने

तेरे होंठों पे

तेरे होंठों पे तबस्सुम की वो हलकी सी-लकीर
मेरी तख़ईल में रह रह के झलक उठती है
यूँ अचानक तेरे आरिज़ का ख़याल आता है
जैसे ज़ुल्मत में कोई शमा भड़क उठती है।

तेरे पैराहने रंगीं की जनूंख़ेज़ महक
ख्वाब बन बन के मेरे ज़ेहन में लहराती है
रात की सर्द ख़मोशी में हर इक झौंके से
तेरी सांसों की, तेरे ज़िस्म की आंच आती है।

मैं सुलगते हुए राज़ों को अयाँ तो कर दूँ
लेकिन इन राज़ों की तशहीर से जी डरता है
रात के ख्वाब उजाले में बयां तो कर दूं
इन हसीं ख्वाबों की ताबीर से जो डरता है।

तेरी सांसों की थकन, तेरी निगाहों का सकूत
दर हक़ीक़त कोई रंगीन शरारत हो न हो
मैं जिसे प्यार का अंदाज़ समझ बैठा हूँ
वो तबस्सुम, वो तकल्लुम, तेरी आदत ही न हो।

सोचता हूँ कि तुझे मिल के मैं जिस सोच में हूं
पहले उस सोच का मक़सूम समझ लूं तो कहूँ
मैं तेरे शहर में अनजान हूँ, परदेसी हूं
तेरे इल्ताफ़ का मफ़हूम समझ लूँ तो कहूं।

कहीं ऐसा न हो, पांव मेरे थर्रा जायें
औ' तेरी मरमरीं बाँहों का सहारा न मिले
अश्क बहते रहें खामोश स्याह रातों में
औ' तेरे रेशमी आंचल का किनारा न मिले।

मौत आ गई न हो मेरे ज़ौक़े-उमीद को
महरूमियों में कैफ़-सा पाने लगा हूं मैं !

एक सुबह

उफ़क़ के दरीचे से किरनों ने झांका
फ़ज़ा खिल गयी, रास्ते मुस्कराय

सिमटने लगी नर्म कोहरे की चादर
जवाँ शाख़सारों ने घूँघट उठाये

परिन्दों की आवाज़ से खेत चौंके
पुरअसरार लय में रहट गुनगुनाये

हसीं शबनमआलूद पगडंडियों से
लिपटने लगे सब्ज़ पेड़ों के साये

वो दूर एक टीले पे आंचल-सा झलका
तसव्वुर में लाखों दिये झिलमिलाये!!

एक सवाल

मेरे ख़्वाबों के झरोकों को सजाने वाली,
तेरे ख़्वाबों में कहीं मेरा गुज़र है कि नहीं ?
पूछ कर अपनी निगाहों से बता दे मुझको
मेरी रातों के मुक़द्दर में सहर है कि नहीं ?

चार दिन की ये रफ़ाक़त जो रफ़ाक़त भी नहीं,
उम्र भर के लिए आज़ार हुई जाती है।
ज़िन्दगी यूँ तो हमेशा से परेशान-सी थी,
अब तो हर साँस गिरांबार हुई जाती है।

मेरी उजड़ी हुई नींदों के शबिस्तानों में
तू किसी ख़्वाब के पैकर की तरह आई है
कभी अपनी-सी, कभी ग़ैर नज़र आती है
कभी इख़्लास की मूरत, कभी हरजाई है।

प्यार पर बस तो नहीं है मेरा, लेकिन फिर भी
तू बता दे कि तुझे प्यार करूं या न करूं ?
तूने ख़ुद अपने तबस्सुम से जगाया है जिन्हें
उन तमन्नाओं का इज़हार करूं या न करूं ?

तू किसी और के दामन की कली है लेकिन
मेरी रातें तेरी ख़ुशबू से बसी रहती हैं
तू कहीं भी हो, तेरे फूल से होंठों की क़सम,
तेरी पलकें मेरी आंखों पे झुकी रहती हैं।

तेरे हाथों की हरारत, तेरी साँसों की महक,
तैरती रहती है एहसास की पहनाई में।
ढूँढती रहती हैं तखईल की बाँहें तुझ को,
सर्द रातों की सुलगती हुई तनहाई में।

तेरा इल्ताफ़ो-करम एक हक़ीक़त है मगर
यह हक़ीक़त भी हक़ीक़त में फ़साना ही न हो
मेरी मानूस निगाहों का यह मोहतात पयाम
दिल के खूँ करने का इक और बहाना हो न हो।

कौन जाने, मेरे इमरूज़ का फ़र्दा क्या है
कुरबतें बढ़ के पशेमान भी हो जाती हैं
दिल के दामन से लिपटती हुई रंगीं नज़रें
देखते देखते अनजान भी हो जाती है।

मेरी नाकाम जवानी की तमन्नाओं के
आख़िरी ख़्वाब की तावीर बता दे मुझको !
तेरे दामन में गुलिस्तां भी हैं, वीराने भी
मेरा हासिल, मेरी तकदीर, बता दे मुझको !!

ग़ज़ल

तरब-ज़ारों पे क्या बीती, सनमख़ानों पे क्या गुज़री
दिले-ज़िन्दा, तेरे मरहूम अरमानों पे क्या गुज़री

ज़मीं ने ख़ून उगला, आसमां ने आग बरसाई
जब इनसानों के दिन बदले तो इनसानों पे क्या गुज़री

हमें यह फ़िक्र, उनकी अंजुमन किस हाल में होगी
उन्हें यह ग़म, कि उनसे छुट के दीवानों पे क्या गुज़री

मेरा इलहाद तो ख़ैर एक लानत था, सो है अब तक
मगर इस आलमे-वहशत में ईमानों पे क्या गुज़री

यह मनज़र कौन सा मनज़र है पहचाना नहीं जाता
स्याख़ानों से कुछ पूछो, शबिस्तानों पे क्या गुज़री

कभी कभी

कभी कभी मेरे दिल में ख़याल आता है !

कि ज़िन्दगी तेरी ज़ुल्फ़ों की नर्म छाओं में
गुज़रने पाती, तो शादाब हो भी सकती थी
यह रंजोग़म की स्याही, जो दिल पे छाई है
तेरी नज़र की शुआओं में खो भी सकती थी

अजब न था कि मैं बेगनाए-जहां हो कर
तेरे जमाल की रानाइयों में खो रहता
तेरा गुदाज़ बदन, तेरी नीमबाज़ आंखें
इन्हीं हसीन फ़सानों में महव हो रहता

पुकारतीं मुझे जब तलख़ियां ज़माने की
तेरे लबों से हलावत के घूँट पी लेता
हयात चीख़ती फिरती बरैहनासर, और मैं
घनेरी ज़ुल्फ़ों के साये छुप के जी लेता

मगर यह हो न सका, और अब यह हालत है,
कि तू नहीं, तेरा ग़म, तेरी जुस्तजू भी नहीं !
गुज़र रही है कुछ इस तरह ज़िन्दगी, जैसे
इसे किसी के सहारे की आरज़ू भी नहीं !

ज़माने भर के दुखों को लगा चुका हूँ गले
गुज़र रहा हूँ कुछ अनजाने राहगुज़ारों से
मुहीब साये मेरी समत बढ़ते आते हैं
हयातो-मौत के पुरहौल ख़ारज़ारों से

न कोई राह, न मन्ज़िल, न रोशनी का सुराग़,
भटक रही है ख़लाओं में ज़िन्दगी मेरी
इन्हीं ख़लाओं में रह जाऊंगा कभी खो कर
मैं जानता हूं मेरी हमनफ़स ! मगर यूँही,

कभी कभी मेरे दिल में ख़्याल आता है !

— — — —

जिन्दगी को बे-नयाज़े आरज़ू करना पड़ा-
आह ! किन आंखों से अंजामे--तमन्ना देखते !

सुन जा दिल-की दास्तां

ये रात, ये चाँदनी फिर कहाँ
सुन जा दिल की दास्तां।

पेड़ों की शाख़ों पे सोयी सोयी चांदनी
तेरे ख़यालों में खोयी खोयी चांदनी
और थोड़ी देर में थक के लौट जायेगी
रात ये बहार की, फिर कभी न आयेगी
दो एक पल और है ये समा
सुन जा दिल की दास्तां।

लहरों के होंठों पे धीमा धीमा राग है
भीगी हवाओं में ठंडी ठंडी आग है
इस हसीन आग में, तू भी जल के देख ले
ज़िन्दगी के गीत की धुन बदल के देख ले
खुलने दे अब धड़कनों की ज़बां
सुन जा दिल की दास्तां !

जाती बहारें हैं, उठती जवानियाँ
तारों की छाओं में कह ले कहानियाँ
एक बार चल दिये गर तुझे पुकार के
लौट कर न आयेंगे क़ाफ़िले बहार के
आ जा अभी ज़िन्दगी है जवां
सुन जा दिल की दास्तां !

उसी दोराहे पर

अब न इन ऊंचे मकानों में क़दम रक्खूंगा
मैंने इक बार ये पहले भी क़सम खायी थी
अपनी नादार मुहब्बत की शिकस्तों के तुफ़ैल
ज़िन्दगी पहले भी शर्मायी थी, झुँझलायी थी।

और यह अहद किया था कि मैं इस आलम में
अब कभी प्यार भरे गीत नहीं गाऊँगा,
किसी चिलमन ने पुकारा भी, तो बढ़ जाऊँगा
कोई दरवाज़ा खुला भी तो, पलट जाऊंगा।

फिर तेरे कांपते होंठों की फ़सूंकार हंसी
जाल बुनने लगी, बुनती रही, बुनती ही रही
मैं खिंचा तुझ से, मगर तू मेरी राहों के लिए
फूल चुनती रही, चुनती रही, चुनती ही रही।

बर्फ़ बरसायी मेरे ज़ेहनोतसव्वुर ने मगर
दिल में इक शोला-एबे नाम सा लहरा ही गया।
तेरी चुपचाप निगाहों को सुलगते पाकर
मेरी बेज़ार तबीयत को भी प्यार आ ही गया।

अपनी बदली हुई नज़रों के तक़ाज़े न छुपा
मैं इस अन्दाज़ का मफ़हूम समझ सकता हूँ
तेरे ज़रकार दरीचों की बुलन्दी की क़सम
अपने इक़दाम का मक़सूम समझ सकता हूँ।

अब न इन ऊंचे मकानों मे क़दम रक्खूंगा
मैंने इक बार ये पहले भी क़सम खायी थी
इसी सरमाया-ओ-इफ़लास के दोराहे पर
ज़िन्दगी पहले भी शरमायी थी, झुँझलायी थी ॥

ग़ज़ल

हवस-नसीब नज़र को कहीं क़रार नहीं
मैं मुन्तज़िर हूँ मगर तेरा इन्तज़ार नहीं

हमीं से रंगेगुलिस्तां, हमीं से रंगेबहार
हमीं को नज़मेगुलिस्तां पे इख़्तियार नहीं

अभी न छेड़ मुहब्बत के गीत ऐ मुतरिब
अभी हयात का माहौल ख़ुशगवार नहीं

तुम्हारे एहदे-वफ़ा को मैं एहद क्या समझूं
मुझे खुद अपनी मुहब्बत का एतबार नहीं

न जाने कितने गिले इस में आज भी है निहां
वोह एक दिल जो किसी का गिलागुज़ार नहीं

यह किस मक़ाम पे पहुंचा दिया ज़माने ने
कि अब हयात पे तेरा भी इख़्तियार नहीं ! !

मैंने जिस वक़्त तुझे पहले-पहल देखा था

मैंने जिस वक़्त तुझे पहले-पहल देखा था
तू जवानी का कोई ख़्वाब नज़र आयी थी
हुस्न का नग़मा-ए-जावेद हुई थी मालूम
इश्क़ का जज़्बा-ए-बेताब नज़र आयी थी।

ऐ जवानी के शबिस्ताँ की परेशां तितली
तू भी इक बूए-गिरफ़्तार है, मालूम न था
तेरे जल्वों में बहारें नज़र आती थीं मुझे
तू सितम-ख़ुर्दा-ए-अदवार है, मालूम न था।

तेरे नाज़ुक से परों पर ये ज़रोसीम का बोझ
तेरी परवाज़ को आज़ाद न होने देगा
तूने राहत की तमन्ना में जो ग़म पाला है
वो तेरी रूह को आबाद न होने देगा।

तूने सरमाये की छाओं में पनपने के लिए
अपने दिल, अपनी मुहब्बत का लहू बेचा है
दिन की बेरूह सजावट का असासा ले कर
शोख़ रातों की मुसर्रत का लहू बेचा है।

ज़ख्म-ख़ुर्दा हैं तखैयुल की उड़ानें तेरी
तेरे गीतों में तेरी रूह के ग़म पलते हैं
सुर्मगों आंखों में यूं हसरतें लौ देती हैं
जैसे वीरान मज़ारों पे दिये जलते हैं ।

इससे क्या फ़ायदा, रंगनीन लबादों के तले
रूह जलता रहे, घुलती रहे, अफ़सुर्दा रहे
होंठ हंसते हों दिखावे के तबस्सुम के लिये
दिल ग़मएज़ीस्त से बोझल रहे, आज़ुर्दा रहे ।

उम्र भर रेंगते रहने से कहीं बेहतर है
एक लमहा, जो तेरी रूह में वुस्सअत भर दे
एक लमहा, जो तेरे गीत को शोख़ी दे दे
एक लमहा, जो तेरी लय में मुसर्रत भर दे ।।

————

चन्द कलियां निशात की चुन कर
मुद्दतों महवे-यास रहता हूँ
तेरा मिलना ख़ुशी की बात सही
तुझ से मिल कर उदास रहता हूं।

... ...

हयात इक मुस्तक़िल ग़म के सिवा कुछ भी नहीं शायद
ख़ुशी भी याद आती है तो आंसू बन के आती है।

किसी को उदास देख कर

तुम्हें उदास सो पता हूँ मैं कई दिन से
न जाने कौन से सदमे उठा रही हो तुम
वोह शोखियाँ, वोह तब्बसुम, वोह क़हक़हे न रहे
हर एक चीज़ को हसरत से तेखती हो तुम
छुपा छुपा के खमोशी में अपनी बेचैनी
खुद अपने राज़ की तशहीर बन गई हो तुम

मेरी उमीद अगर मिट गई तो मिटने दो
उमीद क्या है, बस इक पैशोपस है, कुछ भी नहीं
मेरी हयात को ग़मगीनियों का ग़म न करो
ग़मे-हयात ग़मे-यक-नफ़स है, कुछ भी नहीं
तुम अपने हुस्न की रानाइयों पे रहम करो
वफ़ा फ़रेब है, तूले-हवस है कुछ भी नहीं

मुझे तुम्हारे तग़ाफ़िल से क्यों शिकायत हो
मेरी फ़ना मेरे एहसास का तक़ाज़ा है
मैं जानता हूं कि दुनिया का खौफ़ है तुम को
मुझे खबर है, यह दुनिया अजीब दुनिया है
यहां हयात के पर्दे में मौत पलती है
शिकस्ते-साज़ की आवाज़ रूहे-नग़मा है

मुझे तुम्हारी जुदाई का कोई रँज नहीं
मेरे ख़्याल की दुनिया में मेरे पास हो तुम
यह तुम ने ठीक कहा है—तुम्हें मिला न करूँ
मगर मुझे यह बता दो कि क्यों उदास हो तुम ?
ख़फ़ा न होना मेरी जुर्रते तख़ातुब पर
तुम्हें ख़बर है मेरी ज़िन्दगी की आस हो तुम !

मेरा तो कुछ भी नहीं है, मैं रो के जी लूंगा
मगर ख़ुदा के लिए तुम असीरे-ग़म न रहो
हुआ ही क्या जो ज़माने ने तुम को छीन लिया
यहां पे कौन हुआ है किसी का, सोचो तो
मुझे क़सम है, मेरी दुख-भरी जवानी की
मैं खुश हूं, मेरी मुहब्बत के फूल ठुकरा दो

मैं अपनी रूह की हर इक खुशी मिटा लूंगा
मगर तुम्हारी मुस्सर्रत मिटा नहीं सकता
मैं ख़ुद को मौत के हाथों में सौंप सकता हूँ
मगर यह बार-ए-मुसायब उठा नहीं सकता
तुम्हारे ग़म के सिवा और भी तो ग़म हैं मुझे
निजात जिनसे मैं इक लमहा पा नहीं सकता

ये ऊँचे ऊँचे मकानों की डियोढ़ियों के तले
हर एक गाम पे भूखे भिखारियों की सदा

हर एक घर में यह इफ़लास और भूख का शोर
हर एक समत यह इनसानियत की आहो-बक़ा
यह कारख़ानों में लोहे का शोरोगुल जिसमें
है दफ़न लाखों ग़रीबों की रूह का नग़मा

यह शाहराहों पे रंगीन सारियों की झलक
यह झोंपड़ों में ग़रीबों की बेकफ़न लाशें
यह माल-रोड पे कारों की रेल पेल का शोर
यह पटरियों पे ग़रीबों के ज़र्दरू बच्चे
गली गली में यह बिकते हुए जवां चेहरे
हसीन आँखों में अफ़सुर्दगी सी छाई हुई

यह जंग, और यह मेरे वतन के शोख़ जवाँ
खरीदो जाती हैं उठती जवानियाँ जिन को
यह बात बात पे क़ानून-ओ-ज़ाबते की गिरिफ़्त
यह ज़िल्लतें, यह ग़ुलामी, यह दौरे-मजबूरी
यह ग़म बहुत हैं मेरी ज़िन्दगी मिटाने को
उदास रहके मेरी दिल को और रँज न दो !

ख़ुदकुशी से पहले

उफ यह बेदर्द स्याही, यह हवा की चीख़ें
किसको मालूम है इस शब की सहर हो कि न हो
इक नज़र तेरे दरीचे की तरफ़ देख तो लूं
डूबती आंखों में फिर ताबे नज़र हो कि न हो

अभी रौशन हैं तेरे गर्म-शबिस्तां के दिये
नीलगूं पर्दों से छनती हैं शुआयें अब तक
अजनबी बाहों के हल्क़े में लचकती होंगी
तेरे महके हुए बालों को रिदायें अब तक

सर्द होती हुई बत्ती के धुएं के हमराह
हाथ फैलाये बढ़े आते हैं बोझल साये
कौन पोंछे मेरी आंखों के सुलगते आंसू
कौन उलझे हुए बालों को गिरह सुलझाये

आह! ये मौत की वादी, ये अंधेरी दुनिया
उम्र अपनी इन्हीं तारीक मकानों में कटी
ज़िन्दगी फ़ितरतएबेहिस की पुरानी तकसीर
इक हक़ीक़त थी, मगर चन्द फसानों में कटी

कितनो आसायशें हंसती रहीं ऐवानों में
कितने दर मेरी जवानी पे सदा बन्द रहे
कितने हाथों ने बुना अतलसो-कमख़ाब; मगर
मेरे मलबूस की तक़दीर में पैवंद रहे

ज़ुल्म सहते हुए इनसानों के इस मक़तल में
कोई ख़्वाबों के खिलौनों से कहाँ तक बहले
उम्र भर रेंगते रहने की सज़ा है जीना
एक दो दिन की अज़ीअत हो तो कोई सहले

वही ज़ुलमत है फ़िज़ाओं पे अभी तक तारी
जाने कब ख़त्म हो इनसां के लहू की तकतीर
जाने कब निखरे स्यापोश ज़मीं का जोबन
जाने कब जागे सितम-ख़ुर्दा बशर की तकदीर

अभी रौशन हैं तेरे गर्म शबिस्तां के दिये
आज मैं मौत के ग़ारों में उतर जाऊंगा
और दम तोड़ती बत्ती के धुएं के हमराह
सरहदे-मर्ग़-मुसलल से गुज़र जाऊंगा

फ़रार

अपने माज़ी के तसव्वुर से हिरासां हूं मैं
अपने गुज़रे हुए अय्याम से नफ़रत है मुझे
अपनी बेकार तमन्नाओं पर शर्मिन्दा हूँ
अपनी बेसूद उम्मीदों पे नदामत है मुझे

मेरे माज़ी को अंधेरे में दबा रहने दो !
मेरा माज़ी मेरी ज़िल्लत के सिवा कुछ भी नहीं
मेरी उम्मीदों का हासिल, मेरी काविश का सिला,
एक बेनाम अज़ीयत के सिवा कुछ भी नहीं

कितनी बकार उम्मीदों का सहारा ले कर
मैंने गुलज़ार सजाये थे किसी की खातिर
कितनी बेरब्त तमन्नाओं के धुँधले ख़ाके
अपने ख़्वाबों में बसाये थे किसी की ख़ातिर

मुझसे अब मेरी मुहब्बत के फ़साने न कहो
मुझको कहने दो कि मैंने उन्हे चाहा ही नहीं
और वो मस्त निगाहें जो मुझे भूल गयीं
मैंने उन मस्त निगाहों को सराहा ही नहीं

मुझको कहने दो कि मैं आज भी जी सकता हूँ
इश्क़ नाकाम सही, ज़िन्दगी नाकाम नहीं
उनको अपनाने की ख़्वाहिश, उन्हें पाने की तलब
शौक़े बेकार सही सैये-ग़म-अंजाम नहीं

वही गेसू, वही नज़रें, वही आरिज़, वही जिस्म,
मैं जो चाहूँ तो मुझे और भी मिल सकते हैं
वो कमल जिनको कभी उनके लिए खिलना था
उनकी नज़रों से बहुत दूर भी खिल सकते हैं

—:०:—

नाकामी

मैंने हरचन्द ग़मएइश्क़ को खोना चाहा
ग़मएउल्फ़त ग़मएदुनिया में समोना चाहा

वुही अफ़साने मेरी सम्त रवाँ हैं अब तक
वुही शोले मेरे सीने में निहाँ हैं अब तक
वुही बेसूद ख़लिश है मेरे सीने में अभी
वुही बेकार तमन्नाएं जवां हैं अब तक
वुही गेसू मेरी रातों पे हैं बिखरे बिखरे
वुही आंखें मेरी जानिब निगरां हैं अब तक

कसरतएग़म भी मेरे ग़म का मुदावा न हुई
मेरे बेचैन ख़्यालों को सकूं मिल न सका
दिल ने दुनिया के हर इक दर्द को अपना तो लिया
मुज़महिल रूह को अन्दाज़े-जनूं मिल न सका

मेरी तख़ईल का शीराज़ाएबरहम है वही
मेरे बुझते हुऐ एहसास का आलम है वुही
वुही बेजान इरादे, वुही बेरंग सवाल
वुही बेरूह कशाकश वुही बेचैन ख़्याल

आह इस कशमकश-ए-शामो सहर का अंजाम
मैं भी नाकाम, मेरा ज़ौकएअमल भी नाकाम !

सोचता हूं

सोचता हूं कि मुहब्बत से किनारा कर लूं
दिल को बेगानाएतरग़ीब-ओ-तमन्ना कर लूं

सोचता हूं कि मुहब्बत है जनूने रुसवा
चन्द बेकार से बेहूदा ख्यालों का हजूम
एक आज़ाद को पाबन्द बनाने की हवस
एक बेगाने को अपनाने की सय्ये-मौहूम

सोचता हूं कि मुहब्बत है सरूर-ओ-मस्ती
इसकी तनवीर से रौशन है फ़िज़ाएहस्ती

सोचता हूँ कि मुहब्बत है बशर की फितरत
इसका मिट जाना, मिटा देना, बहुत मुश्किल है
सोचता हूँ कि मुहब्बत से है दुनिया रौशन
आप ये शमाँ बुझा देना बहुत मुश्किल है

सोचता हूँ कि मुहब्बत पे कड़ी शर्तें हैं
इस तमद्दुन में मुसर्रत पे बड़ी शर्तें हैं

सोचता हूँ कि मुहब्बत है इक अफसुर्दा-सी लाश
चादरएइज़्ज़त-ओ-नामूस में कफ़नाई हुई
दौरएसरमाया की रौंदी हुई रुसवा हस्ती
दरगहे मज़ाहबो-इखलाक़ से ठुकराई हुई

सोचता हूँ कि बशर और मुहब्बत का जनूँ
ऐसे बोसीदा तमद्दुन में है इक कारे-ज़बूँ

सोचता हूँ कि मुहब्बत न बचेगी ज़िन्दा
पेश-अज़ां-वक्त कि सड़ जाय ये गलती हुई लाश
यही बेहतर है कि बेगानाएउल्फ़त हो कर
अपने सीने में करूं जज़्बाएनफ़रत की तलाश

और सौदाएमुहब्बत से किनारा कर लूँ
दिल को बेगानाएतरग़ीब-ओ-तमन्ना कर लूँ

कल और आज

कल भी बूंदें बरसी थीं
कल भी बादल छाये थे
और कवि ने सोचा था

बादल, ये आकाश के सपने इन जुल्फों के साये हैं
दोशे-हवा पर मैख़ाने हो मैख़ाने घिर आये हैं

रुत बदलेगी, फूल खिलेंगे, झोंके मद बरसायेंगे
उजले उजले खेतों में रंगीं आंचल लहरायेंगे
चरवाहे बंसी की धुन से गीत फिज़ा में बोयेंगे
आमों के झुंडों के नीचे परदेसी दिल खोयेंगे
पींग बढ़ाती गोरी के माथे से कौंदे लपकेंगे
उलझी उलझी राहों में वोह आँचल थामें आयेंगे
धरती, फूल, आकाश, सितारे सपना-सा बन जायेंगे

कल भी बूंदें बरसी थीं
कल भी बादल छाये थे
और कवि ने सोचा था

ग्राज भी बूंदें बरसेंगी
आज भी बादल छाये हैं

बस्ती पर बादल छाये हैं, पर यह बस्ती किसकी है ?
धरती पर अमृत बरसेगा, लेकिन धरती किसकी है ?

हल जोतेगी खेतों में अल्हड़ टोली दहक़ानों की
धरती से फूटेगी मेहनत फ़ाक़ाकश इनसानों की
फ़सलें काट के मेहनतकश, ग़ल्ले के ढेर लगायेंगे
जागीरों के मालिक ग्राकर सब पूंजी ले जायेंगे
बूढ़े दहक़ानों के घर, बनिये की कुर्क़ी आयेगी
और क़र्ज़ के सूद में कोई गोरी बेची जायेगी
ग्राज भी जनता भूखी है और कल भी जनता तरसी थी
आज भी रिमझिम बरखा होगी कल भी बारिश बरसी थी

ग्राज भी बादल छाये हैं
आज भी बूंदें बरसेंगी
ग्रौर कवि इस सोच में है ?

———

ग़ज़ल

भरम तेरी वफ़ाओं का मिटा देते तो क्या होता,
तेरे चेहरे से हम पर्दा उठा देते तो क्या होता।

मुहब्बत भी तिजारत हो गयी है इस ज़माने में,
अगर ये राज़ दुनिया को बता देते तो क्या होता।

तेरी उम्मीद पर जीने से हासिल कुछ नहीं, लेकिन,
अगर यूं भी न दिल को आसरा देते तो क्या होता।

तेरी उल्फ़त के दम से रौशनी है दिल की दुनिया में,
तेरी उल्फ़त को नफ़रत की सज़ा देते तो क्या होता।

मुझे सोचने दे

मेरी नाकाम मुहब्बत की कहानी मत छेड़
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना
जिन्दगी तल्ख़ सही, ज़हर सही, सम ही सही
दर्द आज़ार सही, जब्र सही, ग़म ही सही
लेकिन इस दर्दे ग़मो जब्र की वुसअत को तो देख
ज़ुल्म की छाओं में दम तोड़ती खलक़त को तो देख
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना
मेरी नाकाम मुहब्बत की कहानी मत छेड़ !

जलसागाहों में यह दहशतज़दा सहमे अम्बोह
राहगुज़ारों पे ये रौंदे हुए लोगों के गरोह
नूए इन्सां में यह सरमाया-ओ-मेहनत का तज़ाद
अमनो-तहज़ीब के परचम तले क़ौमों का फ़साद
हर तरफ़ आग का और खून का सैलाबेअज़ीम
नित नये ढंग से होती हुई दुनिया तक़सीम
लहलहाते हुए खेतों पे जवानी का समां
और दहक़ान के छप्पर में न बत्ती न धुआं
ये फ़लक-बोस मिलें, दिलकशो-रंगीं बाज़ार
ग़लाज़त पे झपटते हुए भूखे नादार

दूर साहिल पे वुह शफ़्फ़ाफ़ मकानों की क़तार
सरसराते हुए पर्दों में सिमटते गुलज़ार
दरो-दीवार पे यह नूर का सैलाबे-रवां
जैसे इक शायरएमदहोश के ख़ावों का जहां
यह सभी क्यों है? यह क्या है? मुझे कुछ सोचने दे
कौन इन्सां का ख़ुदा है मुझे कुछ सोचने दे
अपनी मायूस उमंगों का फ़साना न सुना
मेरी नाकाम मुहब्बत की कहानी मत छेड़ !

—:o:—

कुछ बातें

देस के अदवार की बातें करें
अजनबी सरकार की बातें करें

अगलो दुनिया के फ़साने छोड़ कर
इस जहन्नुम-ज़ार की बातें करें

हो चुके औसाफ़ पर्दे के बयां
शाहदे बाज़ार की बातें करें

दहर के हालात की बातें करें
इस मुसलसल रात की बातें करें

मन्नोसलवा का ज़माना जा चुका
भूख और आफ़ात की बातें करें

आओ परखें दीन के औहाम को
इल्मएमौजूदात की बातें करें

जाबिरो-मजबूर की बातें करें
इस कुहन दस्तूर की बातें करें

ताजे-शाही के क़सीदे हो चुके
फ़ाक़ाकश मज़दूर की बातें करें

गिरने वाले महल की तारीफ़ क्या
तेशाएमज़दूर की बातें करें।

मेरे गीत

मेरे सरकश तराने सुन के दुनिया यह समझती है
कि शायद मेरे दिल को इश्क़ के नग़मों से नफ़रत है
मुझे हंगामाएजंगो-जदल में कैफ़ मिलता है
मेरी फ़ितरत को खूँरेज़ी के अफ़सानों से रग़बत है
मेरी दुनियां में कुछ वुकअत नहीं है रक़्सो-नग़मा की
मेरा महबूब नग़मा शौरे-आहँगे-बग़ावत है

मगर ऐ काश देखे वोह मेरी बेख़्वाब रातों को
मैं जब तारों पे नज़रें गाड़ कर आंसू बहाता हूँ
तस्सवुर बन के भूलो वारदातें याद आती हैं
तो सोज़ और दर्द की शिद्दत से पहरों तलमलाता हूँ
कोई ख़्वाबों में ख़्वाबीदा उमंगों को जगातो है
तो अपनो ज़िन्दगी को मौत के पहलू में पाता हूँ

मैं शायर हूँ, मुझे फ़ितरत के नज़्ज़ारों से उलफ़त है
मेरा दिल दुश्मने-नग़मा-सराई हो नहीं सकता
मुझे इनसानियत का दर्द भी बख़्शा है कुदरत ने
मेरा मक़सद फ़क़त शोला नवाई हो नहीं सकता
जवाँ हूँ मैं, जवानी लग़ज़िशों का एक तूफां है
मेरी वातों में रंगेपारसाई हो नहीं सकता

मेरे सरकश तरानों की हकीक़त है, तो इतनी है
कि जब मैं देखता हूं भूख के मारे किसानों को
ग़रीबों, मुफ़लिसों को, बेकसों को, बेसहारों को
सिसकती नाज़नीनों को, तड़पते नौजवानों को
हकूमत के तशद्दुद को, अमारत के तकब्बर को
किसी के चीथड़ों को, और शहनशाही ख़ज़ानों को

तो दिल ताबे-निशाते-बज़्मे-इशरत ला नहीं सकता
मैं चाहूँ भी तो ख़ाबआवर तराने गा नहीं सकता

———

तक़रीबएनौरोज़

फूट पड़ी मशरिक़ से किरनें
हाल बना माज़ी का फ़साना
भेजे हैं एहबाब ने तोफ़े

गूँजा मुस्तक़बिल का तराना
अटे पड़े हैं मेज़ के कोने
दुल्हन बनी हुई हैं राहें
तकरीब ए नौरोज़ मुबारक !

निकली है बंगले के दर से
इक मुफ़लिस दहक़ान की बेटी
जिस्म के दुखते जोड़ दबाती

सहमी सी, मुर्झाई हुई सी
आंचल से सीने को छुपाती
मुट्ठी में इक नोट दबाये
तकरीब ए नौरोज़ मुबारक !

भूखे ज़र्द, गदागर बच्चे
कार के पीछे भाग रहे हैं
पीप भरी आंखें सहलाते

वक़्त से पहले जाग उठे
सर के फोड़ों को सहलाते
वो देखो ! कुछ और भी निकलें
तक़रीब ए नौरोज़ मुबारक !

बंगाल

जहाने-कोह्ना के मफ़लूज फ़लसफ़ादानो
निज़ामे-नौ के तक़ाज़े सवाल करते हैं

ये शाहराहें इसी वास्ते बनी थीं क्या
कि इन पे देश की जनता सिसक-सिसक के मरे?
ज़मीं ने क्या इसी कारन अनाज उगला था
कि नस्लएआदमो हव्वा बिलक-बिलक के मरे?

मिलें इसी लिए रेशम के ढेर बुनती हैं?
कि दुख़्तरानएवतन तार तार को तरसें!
चमन को इस लिए माली नें ख़ूं से सींचा था?
कि उसकी अपनी निगाहें बहार को तरसें!

ज़मीं को कुव्वते तख़लीक़ के ख़ुदावन्दो
मिलों के मुन्तज़िमो, सल्तनत के फ़र्ज़न्दो!

पचास लाख फ़सुर्दा गले सड़े ढाँचे
निज़ामएज़र के ख़िलाफ़ एहतजाज करते हैं
ख़मोश होंटों से, दम तोड़ती निगाहों से
बशर-बशर के ख़िलाफ़ एहतजाज करते हैं।

अजनबी मुहाफ़िज़

अजनबी देस के मज़बूत गरांडोल जवान
ऊँचे होटल के दरएख़ास पे इस्तादा हैं
और नीचे मेरे मजबूर वतन को गलियां
जिन में आवारा फिरा करते हैं भूखों के हजूम
ज़र्द चेहरों पे नक़ाहत की नमूद
ख़ून में सैंकड़ों सालों की ग़ुलामी का जमूद
इल्म के नूर से आरी—महरूम
फलक ए हिन्द के अफसुर्दा नजूम
जिन को तखईल के पर
छू नहीं सकते हैं उस ऊँची पहाड़ो का सिरा
जिस पे होटल के दरीचों में खड़े हैं तन कर
अजनबो देस के मज़बूत गरांडोल जवान
मुँह में सिगरेट लिए, हाथों में ब्रांडी के गिलास
जेब में चांदी के सिक्कों की खनक
भूखे दहक़ानों के माथों का अरक
रात को जिस के इवज़ बिकता है
किसी इफ़लास की मारी के बदन का सोना, यानी
किसी दोशीज़ाएमजबूर की इस्मत का ग़रूर।
महफ़िलएऐश के गूंजे हुए ऐवानों में
ऊँचे होटल के शबिस्तानों में

क़हक़हे मारते हंसते हुए इस्तादा हैं
अजनबी देस के मज़बूत गरांडोल जवान

इसी होटल के क़रीब
भूखे मजबूर ग़ुलामों के गिरोह
टिकटिकी बांध के तकते हुए ऊपर की तरफ़
मुन्तज़िर बैठे हैं उस सायतेनायाब के, जब
बूट की नोक से नीचे फैंके
अजनबी देस के बेफ़िक्र जवानों का गिरोह
कोई सिक्का, कोई सिगरेट, कोई केक,
या-डबल रोटी के जूठे टुकड़े
छीना झपटी के नज़ारों का मज़ा लेने को
पालतू कुत्तों के एहसास पे हंस देने को।
भूखे मजबूर ग़ुलामों का गरोह
टिकटिकी बांध के तकता हुआ इस्तादा है।

काश ये बेहिस-ओ-बेदिल इन्सां
रोम के ज़ुल्म की ज़िन्दा तसवीर
अपना माहौल बदल देने के क़ाबिल होते
डेढ़ सौ साल के पाबन्दे-सिलासिल कुत्ते
अपने आक़ाओं से ले सकते ख़िराजे-कुव्वत
काश ये अपने लिए आप सफ़-आरा होते
अपनी तकलीफ़ का ख़ुद आप मुदावा होते

इनके दिल में अभी बाक़ी रहता
क़ौमी ग़ैरत का वजूद
इनके सँगोन-ओ-सया सीनो में
गुल न होती एहसास की शम्म
पूरब से उमड़ते हुए ख़तरे के लिए
ये किराये के मुहाफ़िज़ न मँगाने पड़ते!

बुलावा

अँधियारे की ओट में देखो झांक रहा है सुर्ख़ सवेर।

जागो ऐ मज़दूर किसानो !
उठो ऐ मज़दूर इंसानो !

धरती के अन्नदाता तुम हो
जग के प्राण-विधाता तुम हो
धनियों की खुशहाली तुम से
खेतों की हरियाली तुम से
ऊंचे महल बनाए तुम ने
शाही तख़्त सजाए तुम ने

हीरे लाल निकाले तुम ने
नेज़े भाले ढाले तुम ने
हर बगिया के माली तुम हो
इस संसार के वाली तुम हो
वक्त है धरती को अपना लो
आगे बढ़ो, हथियार संभालो

उठो ए मज़लूम इंसानो !
जागो ऐ मज़दूर किसनो !

देखो धरती कांप रही है
गर्द, फरेरे ढाँप रही है
कष्ट की ज्वाला फूट पड़ी है
वक्त है थोड़ा, जंग कड़ी है
फैल रहे हैं काल के घेरे
थामो अपने सुर्ख़ फरेरे

तुम हो जग जनता के सैनिक
पाप के नाशक, सत्य के रक्षक
भूख के आदी, ज़ुल्म के पाले
काली कुटियाओं के उजाले
क्या रोकेगी तुम को शाही
तुम हो बहादुर सुर्ख़ सिपाही

जागो ऐ मज़दूर किसानो !
उठो ऐ मज़लूम इंसानो !

अंधियारे की ओट से देखो, झांक रहा है सुर्ख़ सवेरा !

————

चकले

ये कूचे, ये नीलाम-घर दिलकशी के
ये लुटते हुए कारवां ज़िन्दगी के
कहां हैं कहां हैं मुहाफ़िज़ खुदी के
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहाँ हैं ?

ये पुरपेच गलियां, ये बदनाम बाज़ार
ये गुमनाम राही, ये सिक्कों की झंकार
ये इस्मत के सौदे, ये सौदों पे तकरार
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां हैं ?

यह सदियों से बेख्वाब सहमी-सी गलियां
ये मसली हुई अधखिली ज़र्द कलियां
ये बिकती हुई खोखली रंग-रलियां
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां हैं ?

वोह उजले दरीचों में पायल की छनछन
थकी हारी साँसों पे तबले की घनधन
ये बेरूह कमरों में खांसी की ठनठन
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां हैं ?

ये गूंजे हुए क़हक़हे रास्तों पर
ये चारों तरफ़ भीड़ सी खिड़कियों पर

ये आवाज़े खिचते हुए आंचलों पर
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां है ?

ये फूलों के गजरे, ये पीकों के छींटे
यें बेबाक नज़रें, ये गुस्ताख फिकरे
ये ढलके बदन और ये बीमार चेहरे
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहाँ हैं ?

ये भूखी निगाहें हसीनों की जानिब
ये बढ़ते हुए हाथ सीनों की जानिब
लपकते हुए पांव ज़ीनों की जानिब
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां हैं ?

यहाँ पीर भी आ चुके हैं जवां भी
तनोमन्द बेटे भी, अब्बा मियां भी
ये बीवी भी है और बहन भी है, माँ भी
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां हैं ?

मदद चाहती है ये हव्वा की बेटी
यशोधा की हम-जिन्स, राधा की बेटी,
पयम्बर की उम्मत. ज़ुलैखा की बेटी,
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहाँ हैं ?

ज़रा मुल्क के रहबरों को बुलाओ !
ये कूचे, ये गलियाँ, ये मंज़र दिखाओ !
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर उनको लाओ !
जिन्हें नाज़ है हिन्द पर, वोह कहां हैं ?

ताज महल

ताज, तेरे लिए इक मज़हरे-उल्फ़त ही सही
तुझ को इस वादिये रंगीं से अक़ीदत ही सही

मेरी महबूब, कहीं और मिला कर मुझ से।

बज़्मे शाही में ग़रीबों का गुज़र क्या मानी
सब्त जिस राह पे हों सतवते शाहा के निशां
उस पे उल्फ़त भरी रूहों का सफ़र क्या मानी।
मेरी महबूब पसे-पर्दा ए तशहीर ए वफ़ा
तूने सतवत के निशानों को तो देखा होता
मुर्दा शाहों के मुक़ाबिर से बहलने वाली
अपने तारीक मकानों को तो देखा होता।
अनगिनत लोगों ने दुनिया में मुहब्बत की है
कौन कहता है कि सादिक़ न थे जज़्बे उनके
लेकिन उनके लिए तशहीर का सामान नहीं
क्योंकि वो लोग भी अपनी ही तरह मुफ़लिस थे।
ये इमारतो-मुकाबिर, ये फ़सीलें, ये हिसार
मुतलकुलहुक्म शहनशाहों की अज़मत के सतूं
दामने दहर पे उस रंग की गुलकारी हैं
जिस में शामिल है तेरे और मेरे अजदाद का ख़ूं।

मेरी महबूब, उन्हें भी तो मुहब्बत होगी
जिनकी सन्नाई ने बख्शी है इन्हें शक्ले जमील
उनके प्यारों के मुक़ाबिर रहे बेनामो-नमूद
आज तक उन पे जलाई न किसी ने क़न्दील।

ये चमन ज़ार, ये जमना का किनारा, ये महल
ये मुनक़्क़श दरोदीवार, ये महराब, ये ताक़
इक शहनशाह ने दौलत का सहारा लेकर
हम ग़रीबों की मुहब्बत का उड़ाया है मज़ाक़ !

मेरो महबूब, कहीं और मिला कर मुझ से !

— — — —

मादाम

आप बेवजह परेशान सी क्यों हैं मादाम
लोग कहते हैं, तो फिर ठीक ही कहते होंगे
मेरे अहबाब ने तहज़ीब न सीखी होगी
मेरे माहौल में इन्सान न रहते होंगे।

नूरे-सरमाया से है रूए-तमद्दुन की चमक
हम जहां हैं वहाँ तहज़ीब नहीं पल सकती
मुफ़लिसी हिस्सएलताफ़त को मिटा देती है
भूख आदाब के साँचों में नहीं ढल सकती।

लोग कहते हैं तो लोगों पे ताज्जुब कैसा ?
सच तो कहते हैं कि नादारों की इज़्ज़त कैसी ?
लोग कहते हैं, मगर आप अभी तक चुप हैं
आप भी कहिए ग़रीबों में शराफ़त कैसी ?

नेक मादाम, बहुत जल्द वह दौर आयेगा
जब हमें ज़ीस्त के अदवार परखने होंगे
अपनी ज़िल्लत की क़सम आपकी अज़मत की कसम
हमको ताज़ीम के मय्यार परखने होंगे।

हमने हर दौर में तज़लील सही है, लेकिन
हमने हर दौर के चेहरे को ज़िया बख़्शी है

हमने हर दौर में मेहनत के सितम झेले हैं
हमने हर दौर के हाथों को हिना बख्शी है ।

लेकिन इन तलख मुबाहिस से भला क्या हासिल
लोग कहते हैं, तो फिर ठीक ही कहते होंगे
मेरे अहबाब ने तहज़ीब न सीखी होगी
मैं जहां हूं वहां इन्सान न रहते होंगे ।

— — — —

जागीर

फिर उसी वादिए शादाब में लौट आया हूं
जिस में पिन्हां मेरे ख़्वाबों की तरबगाहें हैं
मेरे अहबाब की इशरत के लिए हर जानिब
शोख़ सीने हैं, जवां जिस्म, हसीं बांहें हैं।

सब्ज़ खेतों में ये दुबकी हुई दोशोज़ाएं
इनकी शरियानों में किस किस का लहू जारी है
किस में जुर्रत है कि इस राज़ की तशहीर करे
सबके लब पर मेरी हैबत का फ़सूं तारी है।

हाय, वो गर्म ओ दिलावेज़ उबलते सीने
जिनसे हम सितवते आबा का सिला लेते हैं
जाने इन मरमरीं जिस्मों को ये मरियल दहक़ां
कैसे इन तीरा घरौंदों में जनम देते हैं।

यह लहकते हुए पौदे, ये दमकते हुए खेत
पहले अजदाद की जागीर थे, अब मेरे हैं
ये चरागाह, ये रेवड़, ये मवेशी, ये किसान
सब के सब मेरे हैं, सब मेरे हैं, सब मेरे हैं

इनकी मेहनत भी मिरी, हासिले मेहनत भी मिरा
इनके बाज़ू भी मिरे, कुव्वते बाज़ू भी मिरी

मैं ख़ुदावन्द हूं इस वुस्सते बपायां का
मौजे आरिज़ भी मिरी, नकहते गेसू भी मिरी।

मैं उन अजदाद का बटा हूँ जिन्होंने पेहम
अजनबी क़ौम के साये की हिमायत की है
ग़द्र की साअते नापाक से लेकर अब तक
हर कड़े वक्त में सरकार की खिदमत की है।

खाक पर रेंगने वाले ये फ़सुर्दा ढांचे
इनकी नज़रें कभी ललकार बनी हैं न बनें
इनकी ग़ैरत पे हर इक हाथ झपट सकता है
इनकी अबरू की कमानें न तनीं हैं न तनें।

हाय, ये शाम, ये झरने, ये शफ़क़ की लाली
मैं इन आसूदा फ़िज़ाओं में ज़रा झूम न लूँ
वो दबे पाँव उधर कौन चली जाती है
बढ़ के उस शोख़ के तर्शे हुए लब चूम न लूँ

एक नया सूरज चमका है

जश्न बपा है कुटियाओं में, ऊँचे ऐवाँ कांप रहे हैं
मज़दूरों के बिगड़े तेवर देख के सुल्तां काँप रहे हैं
जागे हैं इफ़लास के मारे, उठे हैं बेबस दुखियारे
सीनों में तूफ़ान की मौजें, आँखों में बिजली के शरारे
चौक-चौक पर, गली-गली में, सुर्ख़ फरेरे लहराते हैं
मज़लूमों के बाग़ी लश्कर हर जानिब उमड़े आते हैं
शाही दरबारों के दर से फ़ौजी पहरे ख़त्म हुए हैं
जाती जागीरों के हक़ और मोहमल दावे ख़त्म हुए हैं
शोर मचा है बाज़ारों में, टूट गये दर ज़िन्दानों के !
रौंदी कुचली आवाज़ों के शोर से धरती गूँज उठी है
दुनिया के अन्याय-नगर में हक़ की पहली गूँज उठी है
जमा हुए हैं चौराहों पर आकर भूखे और गदागर
एक लपकती आंधी बन कर एक चमकता शोला हो कर
काँधों पर संगीन कुदालें, होंठों पर बेबाक तराने
दहक़ानों के दल निकले हैं अपनी बिगड़ी आप बनाने
आज पुरानी तदबीरों से आग के शोले थम न सकेंगे
उभरे जज़्बे दब न सकेंगे, उखड़े परचम जम न सकेंगे
राज महल के दरबानों से ये सरकश तूफ़ां न रुकेगा
चन्द किराये के तिनकों से सैले-बेपायां न रुकेगा
एक नया सूरज चमका है, एक अनोखी ज़ौबारी है
ख़त्म हुई अफ़राद की शाही, अब जमहूर की सालारी है!

नूरजहां के मज़ार पर

पहलू ए शाह में ये दुख्तर ए जमहूर की कब्र
कितने गुमगश्ता फ़सानों का पता देती है
कितने खूंरेज़ हक़ायक़ से उठाती है नक़ाब
कितनी कुचली हुई जानों का पता देती है ।

कैसे मग़रूर शहन्शाहों की तसकीं के लिए
सालहा साल हसीनाओं के बाज़ार लगे
कैसे बहकी हुई नज़रों के तयैयुश के लिए
सुर्ख़ महलों में जवां जिस्मों के अम्बार लगे ।

•

कैसे हर शाख़ से मुंह-बन्द महकती कलियां
नोच ली जाती थीं शाहों के हरम की ख़ातिर
और मुरझा के भी आज़ाद न हो सकती थीं
ज़िल्ले-सुबहान की उल्फ़त के भरम की ख़ातिर ।

कैसे इक फ़र्द के होंठों की ज़रा सी जुन्बिश
सर्द कर सकती थी बेलौस वफ़ाओं के चिराग़
लूट सकती थी दमकते हुए माथों का सुहाग
तोड़ सकती थी मये-इश्क़ से लबरेज़ अयाग़ ।

सहमी सहमी सी फ़िज़ाओं में ये वीरां तुरबत
इतनी खामोश है, फ़रियाद-कुनां हो जैसे
सर्द शाखों में हवा चीख़ रही है ऐसे
रूह ए तक़दीसो वफ़ा मरसिया-ख़्वां हो जैसे ।

तू, मेरी जान, मुझे हैरतो-हसरत से न देख
हममें कोई भी जहांनूरो-जहांगीर नहीं
तू मुझे छोड़ के ठुकरा के भी जा सकती है
तेरे हाथों में मेरे हाथ हैं, ज़ंजीर नहीं ।

—:•:—

मेरे जहाँ में

मेरे जहां में समन ज़ार ढूँढने वाले
यहाँ बहार नहीं, आतशीं बगूले हैं

धनुक के रंग नहीं सुरमयी फ़िज़ाओं में
उफ़क से ताबउफ़क़ फांसियों के झूले हैं
फिर एक मंज़िले खूँरेज़ की तरफ़ हैं रवां
वो रहनुमा जो कई बार राह भूले हैं

बनामे-अमन हैं जंगो-जदल के मनसूबे
बशोरे-अद्‌ल तफ़ावत के कारख़ाने हैं
दिलों पे ख़ौफ़ के पहरे, लबों पे कुफ़्ले सकूत
सिरों पे गर्म सलाख़ों के शामियाने हैं

मगर लुटे हैं कहीं जब्र और तशद्दद से
वोह फ़लसफ़े कि ज़िया दे गये दिमाग़ों को
क़दम क़दम पे लहू नज़र दे रही है हयात
स्याहियों से उलझते हुए चिराग़ों को

बग़ावतों के दुहल बज रहे हैं चार तरफ़
निकल रहे हैं जवां मशअलें जलाये हुए
तमाम अर्ज़ जहां खौलता समुन्दर है
तमाम कोहो-बयाबां हैं तलमलाये हुए

मेरी सदा को दबाना तो खैर मुमकिन है
मगर हयात की ललकार कौन रोकेगा
नये ख्याल की परवाज़ रोकने वाले
नये अवाम को तलवार कौन रोकेगा

उभर रहे हैं फिज़ाओं में सुर्ख़रू परचम
किनारे मशरिको-मग़रिब के मिलने वाले हैं
हज़ार बर्क़ गिरे, लाख आंधियां उठें
वो फूल खिल के रहेंगे जो खिलने वाले हैं

— · · ·

आवाज़े–अदम

दबेगी कब तलक आवाज़े-आदम, हम भी देखेंगे
रुकेंगे कब तलक जज़बाते-बरहम, हम भी देखेंगे
चलो यूं ही सही, यह जौरे-पेहम हम भी देखेंगे !

दरे-जिन्दां से देखें, या अरूजे-दार पर देखें,
तुम्हें रुसवा सरे-बाज़ारे-आलम हम भी देखेंगे
ज़रा दम लो, मआले-शौकते-जम हम भी देखेंगे !

यह हंगामे-विदाहे-शब है, ऐ ज़ुलमत के फ़रज़न्दो
सहर के दोश पर गुलनार परचम हम भी देखेंगे
तुम्हें भी देखना होगा यह आलम, हम भी देखेंगे !

एक वाक़या

अंधियारी रात के आँगन में यह सुबह के क़दमों की आहट
यह भीगी-भीगी सर्द हवा, यह हलकी-हलकी धुँधलाहट
गाड़ी में हूं तनहा महवे-सफ़र और नींद नहीं है आंखों में
भूले बिसरे अरमानों के ख़्वाबों की ज़मीं है आंखों में
अगले दिल हाथ हिलाते हैं, पिछली प्रीतें याद आती हैं

गुम-गशता खुशियाँ आंखों में आंसू बनकर लहराती हैं
सीने के वीरां गोशों में इक टीस-सी करवट लेती है
नाकाम उमंगें रोती हैं, उम्मीद सहारे देती है
वोह राहें ज़ेहन में घूमती हैं, जिन राहों से आज आया हूं
कितनी उम्मीद से पहुँचा था, कितनी मायूसी लाया हूं !

रद्दे-अमल

चन्द कलियाँ निशात की चुन कर
मुद्दतों महवे-यास रहता हूँ
तेरा मिलना खुशी की बात सही
तुझ से मिलकर उदास रहता हूँ

यकसूई

अहदे-गुमगशता की तस्वीर दिखाती क्यों हो!
एक आवारह-ए-मंज़िल को सताती क्यों हो?

वोह हसीं अहद जो शर्मिदा-ए-ईफ़ा न हुआ,
उस हसीं अहद का मफ़हूम जताती क्यों हो?

ज़िन्दगी शोला-ए-बेबाक बना लो अपनी,
खुद को खाकिसतरे-खामोश बताती क्यों हो?

मैं तसव्वुफ़ के मराहल का नहीं हूं क़ायल,
मेरी तस्वीर पे तुम फूल चढ़ाती क्यों हो?

कौन कहता है कि आहें हैं मुसायब का इलाज,
जान को अपनी अबस रोग लगती क्यों हो?

एक सरकश से मुहब्बत की तमन्ना रख कर,
खुद को आईन के फंदों में फंसाती क्यों हो?

मैं समझता हूँ तक़द्दुस को तमद्दुन का फ़रेब
तुम रसूमात को ईमान बनाती क्यों हो?

जब तुम्हें मुझ से ज़्यादा है ज़माने का ख्याल,
फिर मेरी यूँ यादमें अश्क बहाती क्यों हो?

तुम में हिम्मत है, तो दुनिया से बग़ावत कर दो!
वरना मां-बाप जहां कहते हैं, शादी कर लो!!

शह्कार

मुसव्विर, मैं तेरा शह्कार वापस करने आया हूं !
अब इन रंगीन रुख़सारों में थोड़ी ज़र्दियाँ भर दे
हिजाब-आलूद नज़रों में ज़रा बेबाकियाँ भर दे
लबों की भीगी-भीगी सलवटों को मुज़महिल कर दे
नुमायां रंग पेशानी पे अक्से-सोज़े-दिल कर दे
तबस्सुम-आफ़रीं चेहरे पे कुछ संजीदा-पन भर दे
जवां सीने की मखरूती उठानें सर-नगूं कर दे
घने बालों को कम कर दे मगर रख़शिन्दगी दे दे
नज़र से तमकनत ले कर मज़ाक़े-आजिज़ी दे दे
मगर-हाँ, बेन्च के बदले इसे सोफ़े पे बिठला दे !
यहां—मेरी बजाये इक चमकती कार दिखला दे !!

नज़रे-कालेज

ऐ सरज़मीने-पाक के यारानेनेकनाम
बासद ख़लूस, शायरे-आवारह का सलाम
ऐ वादी-ए-जमील ! मेरे दिलकी धड़कनें
आदाब कह रही हैं तेरी बारगाह में
तू आज भी है मेरे लिये जन्नते-ख़याल
हैं तुझ में दफ़्न मेरी जवानी के चार साल
कुमल्हाए हैं यहां पे मेरी ज़िन्दगी के फूल
इन रास्तों में दफ़्न हैं मेरी ख़ुशी के फूल
तेरी निवाज़िशों को भुलाया न जाएगा
माज़ी का नक़्श दिल से मिटाया न जाएगा

तेरी निशात-ख़ेज़, फ़िज़ाए-जवां की ख़ैर
गुलहाए-रंगोबू के हसीं कारवाँ की ख़ैर
दौरे-ख़ज़ां में भी तेरी कलियां खिली रहें
ता-हश्र यह हसीन फ़ज़ाएं बसी रहें

हम एक ख़ार थे, जो चमन से निकल गए
नंगे-वतन थे, हद्दे-वतन से निकल गए

गाए हैं इस फ़ज़ा में वफ़ाओं के राग भी
नग़माते-आतशीं से बखेरी है आग भी

सरकश बने हैं, गीत बग़ावत के गाए हैं
बरसों नए निज़ाम के नक़्शे बनाए हैं

नग़मा निशाते-रूह का गाया है बारहा
गीतों में आँसुओं को छुपाया है बारहा
मासूमियों के जुर्म में बदनाम भी हुए
तेरे तुफ़ैल मूर्दे-इलज़ाम भी हुए

इस सरज़मीं पे आज हम इक बार ही सही
दुनिया हमारे नाम से बेज़ार ही सही

लेकिन हम इन फ़ज़ाओं के पाले हुए तो हैं
"गर याँ नहीं, तो याँ से निकले हुए तो हैं !"

एक शेयर

फिर न कीजे मेरी गुस्ताख-निगाही का गिला,
देखिए ! आपने फिर प्यार से देखा मुझको !

ग़ज़ल

नफ़स के लोच में रम ही नहीं, कुछ और भी है
हयात साग़रे-सम ही नहीं, कुछ और भी है

तेरी निगाह मेरे ग़म की पासदार सही
मेरी निगाह में ग़म ही नहीं, कुछ और भी है

इधर भी एक उचटती नज़र, कि दुनिया में
फ़िरोग़े-महफ़ले-जम ही नहीं, कुछ और भी है

मेरे शऊर को आवारा कर दिया जिसने
वुह मर्गे-शादी-ओ-ग़म ही नहीं कुछ और भी है।

———

ये किसका लहू है ?

ऐ रहबरे-मुल्को-क़ौम ज़रा
आंखें तो उठा नज़रें तो मिला
कुछ हम भी सुनें हमको भी बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

धरती की सुलगती छाती के बेचैन शरारे पूछते हैं
तुम लोग जिन्हें अपना न सके वो खून के धारे पूछते हैं
सड़कों की ज़ुबाँ चिल्लाती है सागर के किनारे पूछते हैं

ये किसका लहू है, कौन मरा ?
ऐ रहबरे मुल्को क़ौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

वो कौन सा जज़्बा था जिससे फ़रसूदा निज़ामएज़ीस्त हिला
झुलसे हुए वीरां गुलशन में इक आस उम्मीद का फूल खिला
जनता का लहू फौजों से मिला, फौजों का लहू जनता से मिला।

ये किसका जनूँ है कौन मरा
ऐ रहबरे मुल्को कौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

क्या क़ौमो-वतन की जय गा कर मरते हुए राही गुंडे थे ?
जो देश का परचम लेके उठे वो शोख़ सिपाही गुँडे थे ?
जो बारे-ग़ुलामी सह न सके वो मुजरिम एशाही गुंडे थे ?

ये किसका लहू है कौन मरा ?
ऐ रहबरे मुल्को-क़ौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

ऐ अज़्मएफ़ना देने वालो, पैग़ामएबक़ा देने वालो
अब आग से क्यों कतराते हो, शोलों को हवा देने वालो
तूफ़ान से अब डरते क्यों हो मौजों को सदा देने वालो

क्या भूल गये अपना नारा
ऐ रहबरे मुल्को-क़ौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

समझौते की उम्मीद सही सरकार के वादे ठीक सही
हां मश्कएसितम अफसानाँ सही हाँ प्यार के वादे ठीक सही
अपनों के कलेजे मत छेदो अग़यार के वादे ठीक सही

जमहूर से यूँ दामन न छुड़ा
ऐ रहबरे मुल्को-क़ौम बता
ये किसका लहू है कौन मरा ?

हम ठान चुके हैं अब जी में हर ज़ालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो हम आगे बढ़ते जायेंगे
हर मंज़िलएआज़ादी की क़सम, हर मंज़िल पर दुहरायेंगे

यह किसका लहू है कौन मरा
ऐ रहबरे मुल्को-क़ौम बता
यह किसका लहू है कौन मरा?

आज

साथियो मैंने बरसों तुम्हारे लिए
चांद तारों बहारों के सपने बुने
हुस्न और इश्क के गीत गाता रहा
आरज़ूओं के ऐवां सजाता रहा
मैं तुम्हारा मुगन्ना, तुम्हारे लिए
जब भी आया नये गीत लाता रहा।

आज लेकिन मेरे दामनएचाक में
गर्दएराहेसफ़र के सिवा कुछ नहीं !

मेरे बरबत के सीने में नग़मों का दम घुट गया है
तानें चीखों के अम्बार में दब गयी हैं
और गीतों के सुर हिचकियां बन गये हैं।
मैं तुम्हारा मुग़न्नी हूं नग़मा नहीं हूं !
और नग़मे का तअलोक़ का साज़ो-सामां
साथियों, आज तुमने भसम कर दिया है
और मैं अपना टूटा हुआ साज़ थामे
सर्द लाशों के अम्बार को तक रहा हूं।
मेर चारों तरफ मौत की वहशतें नाचती हैं
और इन्साँ की हैवानियत जाग उठी है
बरबरीयत के खूंख़ार इफ़रीत
अपने नापाक जबड़ों को खोले

ख़ून पी पी के ग़ुर्रा रहे हैं
बच्चे माओं की गोदों में सहमे हुए हैं
इस्मतें सरबरहना परेशान हैं
हर तरफ़ शोरएग्राहो-बक़ा है
और मैं इस तबाही के तूफ़ान में
ग्राग और ख़ूँ के हैजान में

सरनगूँ और शिकस्ता मकानों के मलबे से पुर रास्तों पर
अपने नग़मों की झोली पसारे
दरबदर फिर रहा हूँ।

मुझको अम्न और तहज़ीब की भीख दो।
मेरे गीतों की लय मेरे सुर, मेरी नय
मेरे मजरूह होंठों को फिर सौंप दो !!

साथियो, मैंने बरसों तुम्हारे लिए
इन्क़लाब और बग़ावत के नग़मे अलापे
अजनबी राज के ज़ुल्म की छाओं में
सरफ़रोशी के ख़ाबीदा जज़्बे उभारे
और उस सुबह की राह देखी
जिसमें इस मुल्क की रूह आज़ाद हो।
आज ज़ंजीरएमहकूमियत कट चुकी है
और इस मुल्क के बहरोबर, बामोदर
अजनबी क़ौम के ख़ूँ में लथड़े फरेरे की मनहूस
छाओं से आज़ाद हैं।

खेत सोना उगलने को बेचैन हैं
वादियां लहलहाने को बेताब हैं

कोहसारों के सीने में तूफ़ान है
संग और खिश्त बेखाबो बेबार हैं
इनकी आंखों में तामीर के ख्वाब हैं
इनके ख्वाबों को तकमील का रूप दो
मुल्क की वादियां, घाटियां, खेतियां
औरतें, बच्चियां
हाथ फैलाये खैरात को मुन्तज़िर हैं।
इनको अम्न और तहज़ीब की भीख दो।
माओं को उनके होंठों की शादाबियां
नन्हें बच्चों को उनकी खुशी बख्श दो।
मुल्क की रूह को ज़िन्दगी बख्श दो।
मुझ को मेरा हुनर, मेरी लय बख्श दो।
मेरे सुर बख्श दो मेरी नय बख्श दो।
आज सारी फ़िज़ा है भिखारी
और मैं इस भिखारी फ़िज़ा में
अपने नग़मों की झोली पसारे
दरबदर फिर रहा हूं।
मुझको फिर मेरा खोया हुआ साज़ दो
मैं तुम्हारा मुग़न्नी तुम्हारे लिए
जब भी आया, नये गीत लाता रहूंगा।

ग़ज़ल

जब कभी उनकी तव्वजो में कमी पाई गई
अज़-सरे-नौ दास्ताने-शौक़ दुहराई गई

बिक गये जब तेरे लब फिर तुझको क्या शिकवा अगर
ज़िन्दगानी बादह्-ओ-साग़र से बहलाई गई

ए ग़मे-दुनिया तुझे क्या इल्म, तेरे वासते
किन बहानों से तबीयत राह पर लाई गई

हम करें तर्के-वफ़ा अच्छा चलो यूंही सही
और अगर तर्के वफ़ा से भी न रुसवाई गई?

कैसे-कैसे चश्मो-आरिज़ गर्दे-ग़म से बुझ गये
कैसे-कैसे पैकरों की शाने-ज़ेबाई गई

उनका ग़म, उनका तस्सवुर, उनके शिकवे, अब कहां?
अब तो ये बातें भी ऐ दिल हो गईं आई गई

दिल की धड़कन में तवाज़ुन आ चला है ख़ैर हो
मेरी नज़रें बुझ गईं या तेरी रानाई गई?

पन्द्रह अगस्त

ये जश्न, जश्न-ए-मुसर्रत नहीं, तमाशा है
नये लिबास में निकला है रहज़नी का जलूस
हज़ार शमए अखुव्वत बुझा के चमके हैं
ये तीरगी के उभारे हुए हसीं फ़ानूस ।

ये शाख़-ए-नूर, अंधेरों ने जिसको सींचा है
अगर फली तो शरारों के फूल लायेगी
न फल सकी तो नयी फ़स्ल-ए-गुल के आने तक
ज़मीर-ए-अर्ज़ में इक ज़हर छोड़ जायेगी ।

चीन को सलाम

(चीनी शायर याङ् मू के नाम, जिसने चियांग काई शेक को जेल से लिखा था :—)

"बीस साल कैद ?

कागज के एक पुर्जे पर लिखे हुए चन्द लफ़्जों की बिना पर, हो सकता है कि मैं बीस साल तक सूरज की शक्ल न देख सकूं लेकिन क्या तुम्हारा यह गला सड़ा निज़ाम जो बिजली की सी तेज़ी के साथ अपनी मौत की तरफ़ बढ़ रहा है बीस साल तक जिन्दा रह सकेगा ?"

ख़बर नहीं कि सलाखों के गर्म हल्क़ में
तेरी हयातएसितम-आशना पे क्या गुज़री
खबर नहीं कि जमालएसहर की हसरत में
तमाम रात चराग़एवफ़ा पे क्या गुज़री

मगर वो देख फ़िज़ा में गुबार सा उठा
वो तेरे सुर्ख़ जवानों के राहवार आये
नज़र उठा कि वो तेरे वतन के मेहनतकश
गले से अपने ग़ुलामी का तौक उतार आये

उफ़क़ पे सुबहएबहारां का रंग छाया है
फ़िज़ा में सुर्ख़ फरेरों से फूल खिलते हैं

ज़मीं के लब पे हंसी है शफ़ीक़ माँ की तरह
कि उसकी गोद में बिछड़े रफ़ीक़ मिलते हैं।

ख़ुद अपने खून में तर है वुह साम्राज जिसे
बहुत संभाल के लाये थे शातिरानएकुहन
रबाब छेड़ हवाओं में गीत बिखरा है
कि जश्नएनुसरतएमेहनत है जश्नएनुसरतएफ़न

मैं तुझ से दूर सही, लेकिन ऐ रफ़ीक मेरे,
तेरी वफ़ा को मेरी जहदएमुस्तक़िल का सलाम!
तेरे वतन को, तेरी बाविक़ार धरती को
धड़कते खौलते हिन्दोस्तां के दिल का सलाम!!

मेरे गीत तुम्हारे हैं

अब तक मेरे गीतों में उम्मीद भी थी, पसपायी भी,
मौत के क़दमों की आहट भी, जीवन की अंगड़ाई भी,
मुस्तकबिल की किरणें भी थीं, हाल की बोझल ज़ुल्मत भी
तूफ़ानों का शोर भी था, और ख़ाबों की शहनाई भी ।

आज से मैं अपने गीतों में आतिश-पारे भर दूंगा
मद्धम लचकीली तानों में जीवन धारे भर दूंगा
जीवन के अंधियारे पथ पर मशअल लेकर निकलूंगा
धरती के फैले आँचल में सुर्ख़ सितारे भर दूंगा।

आज से ऐ मज़दूर किसानो मेरे राग तुम्हारे हैं
फ़ाक़ाकश इन्सानो मेरे जोग बिहाग तुम्हारे हैं
जब तक तुम भूखे नंगे हो ये शोले ख़ामोश न होंगे
जब तक बे-आराम हो तुम ये नग़मे राहत-कोश न होंगे
मुझको इसका रंज नहीं है लोग मुझे फ़नकार न मानें
फ़िक्रो-सुखन के ताजिर मेरे शेरों को अशआर न मानें
मेरा फ़न मेरी उम्मीदें आज से तुम को अर्पन हैं
आज से मेरे गीत तुम्हारे दुख और सुख का दर्पन हैं ।

तुम से कुव्वत लेकर अब मैं तुमको राह दिखलाऊंगा
तुम परचम लहराना साथी मैं बरबत पर गाऊँगा
आज से मेरे फ़न का मक़सद ज़ंजीरें पिघलाना है
आज से मैं शबनम के बदले अँगारे बरसाऊँगा।

परछाइयां

--एक लम्बी नज्म

जवान रात के सीने पे दूधिया आंचल
मचल रहा है किसी ख्वाब-मरमरी की तरह
हसीन फूल हसीं पत्तियां, हसीं शाख़ —
लचक रहीं हैं किसी जिस्मे- नाज़नीं का तरह
फ़ज़ा में घुल-से गए हैं उफक़ के नर्म खतूत
जमीं हसीन है ख्वाबों की खरज़मीं की तरह
तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं----
कभी गुमान की सूरत, कभी यक़ीं की तरह
वोह पेड़ जिनके तले हम पनाह लेते थे
खड़े हैं आज भी साकित किसी अमीं को तरह

इन्ही के साए में फिर आज दो धड़कते दिल
ख़मोश होठों से कुछ कहने सुनने आए हैं
न जाने कितनी कशाकश से, कितनी काविश से
यह सोते जागते लमहे चुरा के लाए हैं

यही फ़ज़ा थी, यही रुत, यही ज़माना था !
यहीं से हमने मुहब्बत की इबतदा की थी,

धड़कते दिल से, लरज़ती हुई निगाहों से,
हज़ूरे-ग़ैब में नन्ही-सी इलतजा की थी

कि आरज़ू के कंवल खिल के फूल हो जाएं
दिलो नज़र की दुआएं क़बूल हो जाएं

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

तुम आ रही हो ज़माने की आंख से बच कर
नज़र झुकाए हुए और बदन चुराए हुए
खुद अपने क़दमों की आहट से झेंपती डरती
खुद अपने साए की जुंबश से खौफ़ खाए हुए

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

रवां है छोटी सी कश्ती हवाओं के रुख़ पर
नदी के साज़ पे मल्लाह गीत गाता है
तुम्हारा जिस्म हर इक लहर के झकोले से
मेरी खुली हुई बाहों में झूम जाता है

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

मैं फूल टांक रहा हूं तुम्हारे जूड़े में
तुम्हारी आंख मुसर्रत से झुकती जाती है
न जाने आज मैं क्या बात कहने वाला हूं
ज़ुबान खुश्क है, आवाज़ रुकती जाती है

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

मेरे गले में तुम्हारी गुदाज़ बाहें हैं
तुम्हारे होठों पे मेरे लबों के साए हैं
मुझे यक़ीन, कि अब हम कभी न बिछड़ेंगे
तुम्हें गुमान, कि हम मिल के भी पराए हैं

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

मेरे पलंग पे बिखरी हुई किताबों को
अदाए इज्ज़ो करम से उठा रही हो तुम
सुहाग-रात जो ढोलक पे गाए जाते हैं
दबे सुरों में वही गीत गा रही हो तुम

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

वोह लमहे कितने दिलकश थे, वोह घड़ियां कितनी प्यारी थीं
वोह सेहरे कितने नाज़ुक थे, वह लड़ियां कितनी प्यारी थीं
बस्ती की हर इक शादाब गली ख़्वाबों का जज़ीरा थी गोया--
हर मौजे-नफ़स, हर मौजे-सबा, नग़मों का जज़ीरा थी गोया--

नागाह लहकते खेतों से टापों की सदाएं आने लगीं
बारूद की बोझल बू लेकर पच्छिम से हवाएं आने लगीं
तामीर के रोशन चहरे पर तख़रीब का बादल फैल गया
हर गांव में वहशत नाच उठी, हर शहर में जंगल में फैल गया

मग़रिब के मुहज़्ज़ब मुल्कों से कुछ ख़ाकी वरदी-पोश आए
इठलाते हुए मग़रूर आए, लहराते हुए मदहोश आए

आमों की लचकती शाखों से, झूलों की कतारें ख़त्म हुईं
धूल उड़ने लगी बाज़ारों में, भूक उगने लगी खलियानों में
हर चीज़ दुकानों से उठ कर, रूपोश हुई तह-ख़ानों में
बदहाल घरों की बदहाली, बढ़ते बढ़ते जंजाल बनी
मेहंगाई बढ़ कर काल बनी, सारी बस्ती कंगाल बनी
चरवाहियां रस्ता भूल गईं, पनहारियां पनघट छोड़ गईं
कितनी ही कंवारी अबलाएं मां बाप की चौखट छोड़ गईं

अफ़लास-ज़दह दहक़ानों के हल-बैल बिके, खलियान बिके
जीने की तमन्ना के हाथों, जीने ही के सब सामान बिके
कुछ भी न रहा जब बिकने को, जिस्मों की तिजारत होने लगी
ख़लवत में भी जो ममनूह थी वोह जलवत में जिसारत होने लगी

खामोश ज़मीं के सीने में खैमों की तनावें गड़ने लगीं
मक्खन-सी मुलायम राहों पर बूटों की खराशें पड़ने लगीं
फौजों के भयानक बैंड तले चरखों की सदाएँ डूब गईं
जीपों की सुलगती धूल तले फूलों की क़बाएं डूब गईं

इन्सान की क़ीमत गिरने लगी, अजनास के भाओ चढ़ने लगे
चौपाल की रौनक घटने लगी, भरती के दफ़ातर बढ़ने लगे
बस्ती के सजीले शोख़ जवां बनबन के सिपाही जाने लगे
जिस राह से कम ही लौट सकें, उस राह पे राही जाने लगे
इन जाने वाले दस्तों में ग़ैरत भी गई, बरनाई भी
माओं के जवाँ बेटे भी गए, बहनों के चहेते भाई भी
बस्ती पे उदासी छाने लगी, मेलों की बहारें खत्म हुईं

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं!

तुम आ रही हो सरे-आम बाल बिखराए
हज़ार गूना मलामत का बार उठाए हुए
हवस-परस्त निगाहों की चोरह–दस्ती से
बदन की झेंपती उरयानियाँ छुपाए हुए

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं!

मैं शहर जाके हर इक दर पे झांक आया हूँ
किसी जगह मेरी मेहनत का मोल मिल न सका
सितमगरों के सयासी क़मार-ख़ाने में
अलम-नसीब फ़रासत का मोल मिल न सका

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

तुम्हारे घर में क़यामत का शोर बरपा है
महाज़े--जंग से हरकारा तार लाया है
कि जिसका ज़िक्र तुम्हें ज़िन्दगी से प्यारा था
वुह भाई निर्ग़ा-ए- दुश्मिन में काम आया है

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

हर एक गाम पे बदनामियों का जमघट है
हर एक मोड़ पे रुसवाइयों के मेले हैं
न दोस्ती, न तकल्लुफ़, न दिलबरी, न ख़लूस
किसी का कोई नहीं, आज सब अकेले हैं

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं !

वुह रहगुज़र जो मेरे दिल की तरह सूनी है
न जाने तुमको कहां लेके जाने वाली है
तुम्हें खरीद रहे हैं ज़मीर के क़ातिल
उफ़क़ पे खूने-तमन्नाए-दिल की लाली है

तसव्वुरात की परछाइयां उभरती हैं।

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई वुह शाम है
अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख्वाबों का इंजाम है
अब तक याद मुझे

उस शाम मुझे मालूम हुआ
खेतों की तरह इस दुनियाँ में
सहमी हुई दोशीज़ाओं की मुस्कान भी बेची जाती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ,
इस कारगह-ए-ज़रदारी में
दो भोली भाली रूहों की पहचान भी बेची जाती है
उस शाम मुझे मालूम हुआ,
जब बाप की खेती छिन जाए
ममता के सुनहरे ख्वाबों की अनमोल निशानी बिकती है

उस शाम मुझे मालूम हुआ,

जब भाई जंग में काम आएं
सरमाए के क़हबा-ख़्वानों में बहनों की जवानी बिकती है

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई वह शाम है
अब तक याद मुझे
चाहत के सुनहरे ख़्वाबों का इन्जाम है
अब तक याद मुझे

तुम आज हज़ारों मील यहां से
दूर कहीं तनहाई में
या बज़्मेतरब आराई में
मेरे सुपने बुनती होगी बैठी आग़ोश पराई में

और मैं सीने में ग़म लेकर दिन रात मुशक़्क़त करता हूं
जान को ख़ातिर मरता हूं
अपने फ़न को रुसवा करके अग़यार का दामन भरता हूं

मजबूर हूं मैं, मजबूर हो तुम, मजबूर यह दुनिया सारी है
तन का दुख मन पर भारी है
इस दौर में जीने की क़ीमत या, दारोरसन या ख़्वारी है

मैं दारोरसन तक जा न सका, तुम जह्द की हद तक आ न सकीं
चाहा तो, मगर अपना न सकीं
हम तुम दो ऐसी रूहें हैं जो मंज़िले-तसकीं पा न सकीं

जीने को जिये जाते हैं मगर सांसों में चिताएं जलती हैं
ख़ामोश वफ़ाएं जलती हैं

संगीन हक़ायक़-ज़ारों में, ख़्वाबों की रिदाएं जलती हैं

और आज जब इन पेड़ों के तले फिर दो साए लहराए हैं
फिर दो दिल मिलने आए हैं
फिर मौत की आंधी उठी है, फिर जँग के बादल छाए हैं

मैं सोच रहा हूं, इनका भी अपनी ही तरह इंजाम न हो
इनका भी जनूँ नाकाम न हो
इनके मुक़द्दर में लिखी, इक खून में लिथड़ी शाम न हो

सूरज के लहू में लिथड़ी हुई
वह शाम है अब तक याद मुझे
चाहत के सुनेहरे ख्वाबों का
इन्जाम है अब तक याद मुझे

हमारा प्यार हवादिस की ताब ला न सका
मगर इन्हें तो मुरादों की रात मिल जाए
हमें तो कशमकशे-मर्ग-बेअमाँ ही मिली
इन्हें तो झूमती गाती हयात मिल जाए

बहुत दिनों से है यह मशग़ला सयासत का
कि जब जवान हों बच्चे तो क़त्ल हो जायें
बहुत दिनों से है यह ख़ब्त हुक्मरानों को
कि दूर दूर के मुल्कों में क़हत बो जायें

बहुत दिनों से जवानो के ख़्वाब वीरां है
बहुत दिनों से मुहब्बत पनाह ढूंढती है

बहुत दिनों से सितम-दीदह शाहराहों में
निगारे ज़ीस्त की इसमत पनाह ढूँढती है

चलो कि आज सभी पाइमाल रूहों से
कहें कि अपने हर इक ज़ख्म को ज़बां कर लें
हमारा राज़, हमारा नहीं, सभी का है
चलो कि सारे ज़माने को राज़दां कर लें

चलो कि चल के सयासी मक़ामरों से कहें
कि हमको जंगो जदल के चलन से नफ़रत है
जिसे लहू के सिवा कोई रंग रास न आए
हमें हयात के उस पैरहन से नफ़रत है

कहो कि अब कोई क़ातिल अगर इधर आया
तो हर क़दम पे ज़मीं तंग होती जायगी
हर एक मौजे-हवा रुख़ बदल के झपटेगी
हर एक शाख़, रग-संग होती जायगी

उठो कि आज हर इक जँगजू से यह कह दें
कि हमको काम की ख़ातिर कलों की हाजत है
हमें किसी की ज़मीं छीनने का शौक़ नहीं
हमें तो अपनी ज़मीं पर हलों की हाजत है

कहो कि अब कोई ताजिर इधर का रुख़ न करे
अब इस जगह कोई कँवारी न बेची जायगी

यह खेत जाग पड़े उठ खड़ी हुई फसलें–
अब इस जगह कोई क्यारी न बेची जायगी

यह सर ज़मीन है गौतम की और नानक की
इस अर्ज़े–पाक पे वहशी न चल सकेंगे कभी
हमारा खून अमानत है नस्ले-नौ के लिये
हमारे खून पे लशकर न पल सकेंगे कभी

कहो–कि आज भी हम सब अगर खमोश रहे
तो इस दमकते हुए ख़ाकदाँ की खैर नहीं
जनूं की ढाली हुई ऐटमी बलाओं से
ज़मीं की खैर नहीं, आसमाँ की खैर नहीं

गुज़शता जंग में घर ही जले मगर इस बार
अजब नहीं कि यह तनहाइयाँ भी जल जायें
गुज़शता जँग में पैकर जले, मगर इस बार
अजब नहीं कि यह परछाइयां भी जल जायें

तसव्वुरात की परछाइयाँ उभरती हैं !!

फ़नकार

असास	...	नींव

तेरे होठों पे

तख़ईल	...	कल्पना
आरिज़	...	कपोल
पैरहन	...	पोशाक
जनूं खेज़	...	उन्मादजनक
अयां	...	स्पष्ट
तशहीर	...	विज्ञापन
ताबीर	...	व्याख्या
तकल्लम	...	सम्बोधन
मक़सूम	...	किस्मत
इल्ताफ़ का मफ़हूम	...	स्नेह का अर्थ

एक सवाल

रफ़ाकत	...	मित्रता
गिरांबार	...	असह्य
इखलास	...	स्नेह
मानूस	...	जानी पहचानी
मोहतात	...	सावधान
अमरूज़	...	वर्तमान
फ़र्दा	...	कल

कभी कभी

रानाई	...	लावण्य
हलावत	...	माधुरी
खारज़ार	...	कंटीला मार्ग
खला	...	शून्य

उसी दोराहे पर

तुफ़ैल	...	कारण
फ़सूंकार	...	जादूभरी
इक़दाम	...	कदम उठाना

ग़ज़ल

हवस नसीब	...	अभिलाषायुक्त
मुत्तरिब	...	संगीतकार

मैंने जिस वक्त.........

सितम खुर्दा-ए-अदबार	...	संसार के हाथों सताया हुआ
अफ़सुर्दा, आज़ुर्दा	...	शोकपूर्ण, शिथिल

किसी को उदास देखकर

तग़ाफ़ुल	...	बेवफ़ाई (लापरवाही)
मुख़ातब	...	सम्बोधन
असीरेग़म	...	शोकाग्रस्त
बार-ए-मुसायब	...	मुसीबतों का बोझ
गाम	...	मार्ग

खुदकुशी से पहले

ताबे नज़र	...	देखने की शक्ति
शबिस्तां	...	शयनागार
रिदायें	...	चादरें (लटों के अर्थ में)
मलबूस	...	लिबास
मक़तल	...	बुचड़खाना
फ़िज़ा	...	वातावरण
तक़तीर	...	अर्क खेंचने की क्रिया
मर्गे मुस्सलसल	...	निरंतर मृत्यु

फ़रार

तसव्वुर	...	कल्पना
हिरासां	...	भयभीत
बेसूद	...	व्यर्थ
काविश	...	प्रयत्न
पेरब्त	...	ऊबड़ खाबड़

नाकामी

निहां	...	छुपा हुआ
मुदावा	...	इलाज

कसरत-ए-ग़म	...	ग़म की अधिकता
मुज़महिल	...	शिथिल
आलम	...	हालत
ज़ौके-अमल	...	कार्य करने की प्रवृत्ति

सोचता हूँ

बेगाना-ए-तरग़ीबो तमन्ना	......	आकांक्षा और प्रेरणा से वंचित
जनूने रुसवा	......	बदनाम उन्माद
सैय् ये मौहूम	...	व्यर्थ प्रयास
तनवीर	...	चमक
बशर	...	मानव
ताबिन्दा	...	प्रकाशमान
तमद्दुन	...	संस्कृति
नामूस	...	लोक लाज
कारेज़बूं	...	बुरा काम
पेश अज़ वक्त	...	उस समय से पहले
सौदाए मुहब्बत	......	प्रेम का उन्माद

कल और आज

दोशे हवा	......	हवा का आंचल

ग़ज़ल

हासिल	...	प्राप्त
ज़िया	...	चमक
दुहल	...	ढोल, बिगुल
सदा	...	आवाज
परवाज़	...	उड़ान
बर्क़	...	बिजली

ये किसका लहू है

अग़यार	...	ग़ैर

आज

मुगन्नी	...	गीत गाने वाला
दामन-ए-चाक	...	फटी हुई झोली
तख़लीक़	...	रचना
बरबरीयत	...	बर्बरता

इफरीत	...	भूत
सरबरहना	...	नग्न
सरनंगूं	...	सिर झुकाये हुए
नै	...	बांसुरी
मजरूह	...	घायल
बहरोबर	...	समुन्दर-धरती
संग और खिश्त	...	ईंट पत्थर
तकमील	...	पूर्णता

ग़ज़ल

अज़सरे नौ	...	नये सिरे से
पैकर	...	सुन्दरी
ज़ेबाई	...	सजधज
तवाज़ुन	...	संतुलन

पन्द्रह अगस्त

रहज़न	...	डाकू
अखुव्वत	...	भाई चारा
तीरगी	...	घोर अंधकार
ज़मीर-ए-अर्ज़	...	धरती की आत्मा में

चीन को सलाम

जमाल-ए-सहर	...	प्रातः का श्रृंगार
राहवार	...	घोड़े
तौक	...	फंदा
उफ़क	...	क्षितिज
शफ़ीक	...	स्नेही
रफ़ीक	...	साथी
शातरानेकुहन	...	पुराने मक्कार
नुसरत	...	विजय
फ़न	...	कला
जहदएमुस्लिसल	...	स्थाई संग्राम
बाविकार	...	सम्मानित

मेरे गीत तुम्हारे हैं

आतिश पारे	...	आग के टुकड़े
राहतकोश	...	सुखद